प्रातःक्लास 30/5/68 ओमशान्ति पिताश्री

ओमशांति। बाप बच्चों से पूछते हैं कि आत्मा सुनती है या शरीर सुनता है? (आत्मा) आत्मा सुनेगी ज़रूर शरीर द्वारा। बच्चे लिखते भी हैं ऐसे फलाने की आत्मा बापदादा को याद करती है, फलाने की आत्मा आज फलाने जगह जाती है। यह जैसे आद(त) पड़ जाती है। हम आत्मा हैं; क्योंकि बच्चों को आत्म–अभिमानी बनना है। जहाँ भी देखते हो, जानते हो आत्मा और शरीर है और इनमें हैं दो आत्माएँ और एक शरीर। एक आत्मा को परमात्मा, एक को आत्मा कहते हैं। परमात्मा खुद कहते हैं मैं इस शरीर में जिसमें इनकी आत्मा भी रहती है मैं प्रवेश करता हूँ। शरीर बिगर तो आत्मा रह न सके। अभी बाप अपन को कहते हैं अपन को भी तुम आत्मा समझो। अपन को आत्मा समझेंगे तो बाप को याद करेंगे और पवित्र बनेंगे, शांतिधाम जावेंगे। फिर दैवीगुण भी जितना धारण करेंगे और करावेंगे, स्वदर्शन चक्रधारी बनकर और बनावेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। इसमें कोई मूँझ हो तो पूछ सकते हो। यह तो ज़रूर है मैं आत्मा हूँ। बाप बच्चों को ही कहते हैं जो ब्राह्मण बने हैं। दूसरे को नहीं कहेंगे। दूसरों से बात नहीं करेंगे। बच्चे ही प्रिय लगते हैं। हरेक बाप को अपने बच्चे ही प्रिय लगते हैं। दूसरे को भल बाहर से प्यार करेंगे; परन्तु बुद्धि में है यह हमारे बच्चे नहीं हैं। मैं तो बच्चों से ही बात करता हूँ; क्योंकि बच्चों को ही पढ़ाना है। बाकी बाहर वालों को पढ़ाना तुम्हारा काम है। वह तो बहुत ही माथा खपाते हैं। कोई 6 मास, कोई 8 मास माथा खपाते हैं। समझते ही नहीं। कोई तो झट समझ जाते हैं। कोई थोड़ा समझ फेरी पहन कर चले जावेंगे। फिर जब देखेंगे यहाँ तो बहुत वृद्धि हो रही है तब आवेंगे। समझेंगे यहाँ तो दिन–प्रतिदिन वृद्धि को पाते रहते हैं। देखें तो सही। तुम यही समझावेंगे बाप सभी आत्माओं को वा बच्चों को कहते हैं मुझे याद करो। सभी आत्माओं को पावन कर्ता वह बाप ही है। वह कहते हैं मेरे सिवाय और कोई को भी याद न करो। मेरी अव्यभिचारी याद रखो। तुम्हारी आत्मा पावन बन जावेगी। पतित–पावन मैं एक ही हूँ। मेरी याद से ही आत्मा पवित्र बनेगी। इसलिए कहते हैं– बच्चे, मोमकम् याद करो। तुम्हारा बापू जी भी कहते थे पतित–पावन... लिबरेटर। पतित राज्य से लिबरेट करते हैं। कहाँ ले जाते हैं? शांतिधाम और सुखधम। मूल बात है ही पावन बनने की। 84 का चक्र समझाना भी बहुत सहज है। चित्र देखने से ही निश्चय बैठ जाता है। इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं म्युज़ियम आदि खोलो भभके से। तो मनुष्यों को भभका खैंचेगा। बहुत ही आवेंगे। तुम यही सुनावेंगे हम बाप की श्रीमत पर यह बन रहे हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और दैवगुण धारण करो। बैज तो ज़रूर साथ में होना चाहिए। मिटल वाला बैज इतना काम का नहीं है, जितना वह; क्योंकि उनमें कृष्ण प्रिन्स है। तुम जानते हो हम बेगर टू प्रिंस बनेंगे। पहले तो कृष्ण बनेंगे ना। जब तक कृष्ण न बने तब तक ना० बन न सके। बच्चे से बड़ा हो तो नारायण नाम मिले। इनमें दोनों ही चित्र हैं। तुम यह बनते हो। अभी तुम सभी बेगर बने हुए हो। यह ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ (ब्रह्माकुमारियाँ) सभी बेगर्स हैं। इन पास कुछ भी नहीं है। बेगर अर्थात् जिनके पास कुछ भी नहीं है। तुम बच्चों पास कुछ भी नहीं है। कोई–2 को बेगर नहीं कहेंगे। यह (बाबा) तो है सबसे बड़ा बेगर। इसमें पूरा बेगर बनना होता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते आसक्ति तोड़नी होती है। तुमने अनायास ही ड्रामा अनुसार आसक्ति तोड़ दी है। जो निश्चय बुद्धि से जानते हैं हमारा जो कुछ है वह बाबा को दे दिया। कहते भी हैं ना हे भगवान आपने जो कुछ दिया है वह आपका ही है। हमारा नहीं है। वह तो हुआ भक्तिमार्ग। अभी बाप समझाते हैं तुम भक्तिमार्ग में कहते थे। उस समय तो शिवबाबा दूर था। अभी तो शिवबाबा बहुत ही नज़दीक है। सामने उनका बनना होता है। तुम कहते हो बाबा–बाबा। बाबा के शरीर को नहीं देखना है। बुद्धि चली जाती है ऊपर। भल लोन लिया हुआ शरीर है; परन्तु तुम्हारी बुद्धि में है हम शिवबाबा से बात करते हैं। यह तो किराया पर लिया हुआ रथ है। उनका थोड़े ही

यह भी ज़रूर है जितना बड़ा आदमी होगा तो किराया भी बहुत मिलेगा। मकान मालिक देखेंगे राजा मकान लेते हैं तो एक हज़ार किराया का 4 हज़ार बोल देंगे; क्योंकि समझते हैं यह तो धनवान है। राजा लोग कब बोलेंगे नहीं कि यह जास्ती लेते हो। नहीं। उनको पैसे आदि की परवाह ही नहीं रहती। वह खुद कब कोई से बात नहीं करते हैं। प्राइवेट सेक्रेटरी ही बात करते हैं। बीच में वह भी 800–1000 खावेंगे। राजा कोई बात नहीं करते। आजकल तो रिश्वत बिगर काम नहीं चलता है। बाबा तो बहुत ही अनुभवी है। वह लोग बड़े ही रॉयल होते हैं। चीज़ पसंद की, बस, फिर सेक्रेटरी को कहेंगे इनसे फसल कर ले आओ। महाराजाओं पास माल ले जाओ। पैसे खोल कर देंगे। महाराजा–महारानी दोनों ही आवेंगे। जो चीज़ पसंद होगी उन पर सिर्फ अंगुली से इशारा करेंगे। बस। उठावेंगे सेक्रेटरी। उनको क्या परवाह है दाम आदि पूछने की। सेक्रेटरी बात–चीत कर बीच में अपना भी हिस्सा निकाल लेते हैं। कोई–2 राजाएँ साथ में ही पैसा ले आते हैं। सेक्रेटरी को कहेंगे इनको पैसा दे दो। बाबा तो सभी के साथ संबंध में आए हैं। जानते हैं कैसे–2 उन्हों की एक्ट चलती है। उनके सेक्रेटरी पास बैग रहती है। चीज़ ले आओ, पैसा दिया। जैसे कि खजांची रहते हैं राजाओं की। जैसे यहाँ भी शिवबाबा का खजांची है ना। यह तो ट्रस्टी है। बाबा का इनमें कोई मोह नहीं है। इसने अपने पैसे में ही मोह नहीं रखा। सभी शिवबाबा को दिया तो फिर शिवबाबा के धन में मोह कैसे रखेंगे। यह है ट्रस्टी। जिनके पास धन रहता, आजकल गवर्मेंट कितना जांच करती है। विलायत से आते हैं तो एकदम अच्छी रीत जांच करते हैं। हीरे आदि कैसे मनुष्य छिपाकर ले आते हैं। तुम सुनो तो वण्डर खाओ। तो गवर्मेन्ट भी कच्ची नहीं है। पूरी जांच रखती है। अगर कोई रिश्वत दे देते हैं ऑफीसर को तो फिर वह युक्ति से छोड़ देते हैं। यह है ही ऐसी दुनिया। अभी तुम बच्चे जानते हो कैसे बेगर बनना होता है। कुछ भी याद न आए। आत्मा अशरीरी बन जाए। इस शरीर को भी अपना न समझे। अशरीर। हमारा कुछ न रहे, ऐसा बनना है। बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। अभी तुमको वापस जाना है। तुम जानते हो बेगर कैसे बनना होता है। शरीर से भी ममत्व टूट जाए। आप मुए, मर गई दुनिया। यही मंज़िल है। समझते हो बाबा बरोबर ठीक कहते हैं, अभी हमको वापस जाना है। शिवबाबा को तो तुम जो कुछ देते हो उसका फिर रिटर्न में दूसरे जन्म में मिल जाता है। इसलिए कहते हैं यह सभी कुछ ईश्वर ने दिया है। आगे जन्म में ऐसा कुछ कर्म अच्छा किया है जिसका फल मिला है। शिवबाबा रखता किसका नहीं है। बड़े राजाएँ जमींदार लोग जो होते हैं उनको नज़राना भी देते हैं। फिर कोई राजाएँ नज़राना लेते हैं, कोई नहीं लेते हैं। वहाँ तुम कुछ भी दान–पुण्य आदि नहीं करते हो; क्योंकि वहाँ तो तुम्हारे पास बहुत पैसे हैं। दान किसको करेंगे? गरीब वहाँ होते ही नहीं। तुम बेगर से प्रिंस बन जाते हो। वहाँ है ही सभी साहुकार। भिखारी–फकीर आदि वहाँ होते ही नहीं। तुम ही फकीर से अमीर, अमीर से फकीर बनते हो। कहते हैं इनको सिहत बखसो। कृपा करो। यह करो। आगे शुरू में सभी शिवबाबा से माँगते थे। फिर व्यभिचारी बन गए तो सभी के आगे जाते रहते हैं। शंकर के आगे भी जाकर कहते हैं झोली भर दो... अभी धतूरा खाने वाला, भांग पीने वाला, वह फिर क्या झोली भरेगा! यह सभी बातें तुम अभी समझते हो। कितना नॉनसेंस, पत्थरबुद्धि, आसुरी, तुच्छ बुद्धि मनुष्य हैं। गायन भी है पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि। तो तुम बच्चों को खुशी बहुत रहनी चाहिए। गायन भी है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपिकाओं से पूछो। किसको फायदा बहुत होता है तो बहुत खुश होते हैं। तो तुम बच्चों को भी बहुत खुशी होनी चाहिए। तुमको 100% खुशी थी। फिर 75% घटती गई। अभी तो कुछ भी है नहीं। बेहद की बादशाही। फिर होते हैं अल्प काल के लिए हद की राजाई। अभी बिरला के पास कितनी ढेर मिल्कियत है। मंदिर बनाते हैं। इससे कुछ नहीं मिलता। गरीबों को थोड़े ही कुछ देते हैं। मंदिर बनाया जहाँ मनुष्य आकर माथा टेकेंगे। हाँ, गरीबों को दान देते हैं तो उसका रिटर्न में मिल सकता

धर्मशाला बनाते हैं तो बहुत मनुष्य जाकर वहाँ विश्राम पाते हैं तो दूसरे जन्म में अल्पकाल लिए सुख मिल जाता है। कोई हॉस्पिटल बनाते हैं तो सभी अल्प काल लिए सुख मिलता है एक जन्म के लिए। यह तो बेहद का बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। इस पुरुषोत्तम संगमयुग की बहुत महिमा है। तुम्हारी भी बहुत महिमा है जो तुम पुरुषोत्तम बनते हो। तुम ब्राह्मणों को ही आकर भगवान पढ़ाते हैं। वही ज्ञान सागर, मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष का बीजरूप है। सारी ड्रामा के आदि–मध्य–अंत का राज़ समझाते हैं। तुमसे पूछेंगे, क्या तुमको पढ़ाते हैं? बोलो, क्या यह भूल गए हो, गीता में भगवानुवाच है ना मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। इनका अर्थ भी अभी तुम समझते हो। पतित राजाएँ, पावन राजाओं की पूजा करते हैं। इसलिए बाप कहते हैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह ल०ना० स्वर्ग के मालिक थे ना। स्वर्ग के देवताओं को द्वापर–कलियुग में सभी पूजन–नमन करते हैं। इन बातों को भी अभी तुम समझते हो। भक्त लोग कुछ भी समझते थोड़े ही हैं। वह तो सिर्फ शास्त्रों की कहानी पढ़ते–सुनते रहते हैं। बाप कहते हैं तुम जो गीता आधा कल्प से सुनते आए हो उससे कुछ प्राप्ति हुई? पेट तो कुछ भी भरा नहीं। अभी तुम्हारा पेट भर रहा है। तुम जानते हो पार्ट एक ही बार चलता है। खुद भगवान कहते हैं मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ। ऊपर से डायरैक्शन देंगे क्या? कहते हैं मैं सम्मुख आता हूँ। अभी तुम सुन रहे हो। यह ब्रह्मा भी कुछ नहीं जानते थे। अभी जानते जाते हैं। बाकी पानी गंगा की पावन करने वाली नहीं है। यह है ज्ञान की बात। तुम जानते हो बाप सम्मुख बैठे हैं। तुम्हारी बुद्धि में अभी ऊपर में नहीं आवेगा। यह रथ जहाँ होगा वहाँ ही तुम याद करेंगे। बम्बई जावेंगे, कहेंगे– इस समय शिवबाबा वहाँ है। शिवबाबा फलाने जगह गया है। यह है उनका रथ। यह है ताँबे की वा लोहे की डब्बी। उनको बाबा बूट भी कहते हैं। डबली भी कहते हैं। इस डबली में यह हीरा है। कितनी फर्स्ट क्लास चीज़ है। इनको तो रखना चाहिए सोने की डबली में, गोल्डन एज्ड डबली में; परन्तु बाबा कहते हैं मैं गोल्डन डबली में कब प्रवेश नहीं करता हूँ। मैं आता ही हूँ सेवा करने धोबी बनकर। कहते हैं ना धोबी से घर से गई छू। उनको कहते छू मंत्र। छू मंत्र से सेकण्ड में जीवनमुक्ति। इसलिए उनको जादूगर भी कहते हैं। सेकण्ड में निश्चय हो जाता है हम यह बनेंगे। यह बातें तुम अभी प्रैक्टिकल में सुनते हो। पहले जब सत्यनारायण की कथा सुनते थे तो यह समझते थे क्या? उस समय तो कथा सुनते विलायत, स्टीमर आदि याद रहता था। सत्य ना० की कथा सुनकर करोड़ों मुसाफिरी पर जाते थे। वह तो फिर लौट आते थे। बाप तो कहते हैं तुमको इस छी–2 दुनिया में लौटना ही नहीं है। भारत अमरलोक, स्वर्ग, देवी–देवताओं का राज्य था। यह ल०ना० विश्व के मालिक थे ना। इनके राज्य में पवित्रता–सुख–शांति थी। दुनिया भी यह मांगती है विश्व में शांति हो। सभी मिल एक हो जाए। अभी इतने धर्म मिलकर एक कैसे हो सकते हैं? हरेक का धर्म अलग, फिचर्स अलग–2, सभी एक कैसे होंगे? वह तो है ही शांतिधाम और सुखधाम। वहाँ एक धर्म, एक राज्य होता है। दूसरा कोई धर्म ही नहीं जो ताली बजे। उसको विश्व में शांति कहा जाता है। अभी तुम बच्चों को बाप पढ़ा रहे हैं। यह भी जानते हैं सभी बच्चे एकरस नहीं पढ़ते हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं। यह राजधानी स्थापन हो रही है। बच्चों को कितना समझदार बनाया जाता है। यह है ईश्वरीय युनिवर्सिटी। भक्त लोग समझते नहीं। अनेक बार सुना भी है भगवानुवाच; क्योंकि गीता है ही भारतवासियों का धर्म–शास्त्र। गीता की तो अपरमअपार महिमा है। सर्व शास्त्रमई शिरोमणि गीता शास्त्र है। श्री अर्थात् श्रेष्ठ। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ, पतित–पावन, सद्गति दाता है ही एक भगवान जो सभी आत्माओं का बाप है। तब तो सभी कहते हैं ब्रदर्सहुड। वी आर ऑल ब्रदर्स। हम सभी आत्माएँ भाई–2 हैं। भारतवासी अर्थ को समझते ही नहीं हैं। बेसमझी से सिर्फ कह देते हम सभी भाई–2 हैं। अभी तुमको बाप ने समझाया है हम आत्माएँ भाई–2 हैं। हम शांतिधाम के रहने वाले हैं। यहाँ पार्ट बजाते–2 हम बाप को भी भूल गए हैं तो घर को भी भूल गए हैं। जो बाप भारत को सारे विश्व का राज्य

देते हैं उनको भूल गए। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। यह मनुष्य सृष्टि रूपी ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है जिसको भक्त लोगों ने लाखों वर्ष लगा दिया है। कलियुग की आयु कहते हैं 40 हज़ार वर्ष है। अजन अभी शुरू हुआ है। बाप कहते हैं देखो बच्चे, कितने मूर्ख हैं। कितना घोर अंधियारे में हैं; क्योंकि रावण राज्य है ना। कुछ भी समझते नहीं। एक भी मनुष्य नहीं जिसको ड्रामा के आदि–मध्य–अंत का नॉलेज हो। मनुष्य को ही ड्रामा को तो जानना चाहिए ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको भी कोई नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं तुमको कितना धनवान, विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम फिर राजाई गंवा देते हो। वहाँ है ही सभी क्षीर खण्ड। यहाँ माया के राज्य में सभी लून–पानी है। खान–पान कितना गंदा है। इनको कहा जाता है पतित दुनिया। पावन दुनिया थी सतयुग, जहाँ देवताएँ थे। फिर पावन से पतित कौन बनाते हैं यह भी समझ की बात है ना। तुम्हारे सिवाय कोई भी नहीं जानते। ऐसा विश्व का महाराजा सिवाय बाप के कोई बना न सके। इन्हों को बाबा ने कैसे बनाया यह भी तुम अभी जानते हो। राज्य पाया फिर कैसे गंवाया यह भी तुम जानते हो। इस चक्र को जानने से तुम यह बन जाते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह पढ़ाई है। भक्ति को पढ़ाई नहीं कह सकते। उसमें एम–ऑब्जेक्ट कुछ भी है नहीं। इतने वेद–शास्त्र, गीता आदि पढ़ते हैं; परन्तु उनसे मिलेगा क्या? भगवानुवाच मैं राजयोग सिखलाता हूँ, राजाओं का राजा बनाता हूँ; परन्तु वह कब आया था यह किसको पता नहीं। कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। एक तो कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक होता है। हाँ, ऐसे कहेंगे, भगवान ने पढ़ाकर ऐसा भगवान–भगवती बनाया। भगवान ने ऐसा बनाया इसलिए उन्हों को भी भगवान–भगवती कह देते हैं; परन्तु बाप कहते हैं भगवान एक को ही (कहा) जाता है। यह तो देवी–देवताएँ हैं। उनको भगवान नहीं कहेंगे। यह है डिटीज़्म। आदि सनातन देवी–देवता धर्म किसने स्थापन किया यह किसको भी पता नहीं है। वह समझते हैं कृष्ण ने किया; परन्तु कृष्ण की आत्मा भी अभी पढ़ रही है, जिसमें फिर बाबा ने प्रवेश किया है। तो यह फिर वह बन जावेंगे। तुम उनके डिनायस्टी के देवता बन जाते हो। उनको कहा जाता है विश्व की युनिवर्सिटी। सारे विश्व को सद्गति करने वाला एक ही बाप है। कैसे सारा दुनिया सद्गति को पाती है यह भी तुम ही जानते हो। तुम तो चले जाते हो सतयुग सुखधाम में। वहाँ बहुत थोड़े रहते हैं। बाकी सभी शांतिधाम में चले जाते हैं। फिर वहाँ से नम्बरवार आते रहेंगे। आत्माएँ सभी शरीर छोड़ कर चली जाती है। हर 5000 वर्ष बाद तुम फिर से यह बनते हो। इसको कहा जाता है ज्ञान। यह ज्ञान कोई भी दे न सके। एक बाप द्वारा ही मिलता है। तुम्हारा टीचर कौन है? शिवबाबा। हाँ, तुम कहेंगे हमको वह शिवबाबा ही पढ़ाते हैं। उस एक को ही कहा जाता है सतगुरु। बाकी गुरु लोग तो ढेर के ढेर हैं। यह तो है पढ़ाई। भक्तिमार्ग ही अलग है। सबसे जास्ती भक्त तो यह था। तुम भी थे। जो बहुत–2 भक्ति करते हैं, फल भी उनको देते हैं। हम ही पुराने भक्त हैं। पहले एक शिव की पूजा करते थे। तत् त्वम्। तुमको ही शिवबाबा ने राजभाग दिया था। फिर दे रहे हैं। जिसने भक्ति नहीं की होगी वह इतना पढ़ेंगे भी नहीं। जास्ती पढ़ने लग पड़े तो समझो इसने भक्ति जास्ती की है। यह ही ऊँच पद पावेगा। रग देखनी पड़ती है। गाते भी हैं माला फेरते युग पास हो गए, मन का मीत सच्चा बाप न मिला। आधा कल्प माथा मारा। पहले शिव की भक्ति की फिर देवताओं की की। अभी तो पानी आदि की भी पूजा करते रहते हैं। बाप कहते हैं पानी में स्नान करने से पावन थोड़े ही बनता। जिनको गुरु किया वह भी पापात्माएँ। बाप कहते हैं अभी बीती सो बीती। यह पुरानी दुनिया न जीती देखो। यह सन्यासी आदि फिर भी अपने समय पर आवेंगे जब शंकराचार्य आकर धर्म की स्थापना करेंगे। सतयुग में तो आ न सके। वह राजयोग सिखला न सके। वह है ही निवृत्तिमार्ग वाले। पवित्र प्रवृत्तिमार्ग का ज्ञान दे न सके। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।